RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पुनर्जागरण कालीन सांस्कृतिक चेतना

मनोज

शोधार्थी हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

पुनर्जागरण की शुरूआत मोटेतौर पर उन्नीसवीं सदी में मानी है। इस काल में जन–चेतना पुनर्जागरण की भावना से अनुप्रणित थी। पुनर्जागरण अर्थात् फिर से जगना ! इसे हम कुछ इस तरह भी परिभाषित कर सकते है कि 'एक नई सोच के साथ जगना'। इस काल में रीतिकाल से चली आ रही श्रंगारिक प्रवृति को समाज की तरफ मोड़ा व आम जनता को साहित्य का केन्द्र बनाया। इससे पहले सामान्य वर्ग की तरफ ध्यान न देकर राजा–महाराजाओं की प्रशंसा व सुन्दरियों के नख–शिख का वर्णन किया जाता था तथा आम जनता का साहित्य में कोई स्थान नहीं था।

पुनर्जागरणकालीन भारत में कम्पनी को विदेशी शक्ति ने नई राजनीति के साथ नये समाज, नये व्यवहार, नई संस्कृति और नए धर्म से हिंदुओं को परिचित कराया। राजनीति, समाज, लोक–व्यवहार, संस्कृति और धर्म के क्षेत्र में नई जिज्ञासाओं ने जन्म लिया। इस युग में मध्य वर्ग अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी साहित्य और खान–पान एवं लोक–व्यवहार में अंग्रेजी के अनुकरण की ओर दौड़ रहा था।

यह समय भारतवर्ष के लिए अत्यंत संकट का समय था। एक नई संस्कृति और सभ्यता से उसका संघर्ष चल रहा था। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त एक जन समुदाय भारतीय धर्म–कर्म एवं संस्कृति की बात भूल कर 'साहब' बने चला था।

ऐसे समय में तात्कालीक लेखकों ने भारतीयता को लुप्त होने से बचाने का प्रयास किया।

'अ¡गरेजी हम पढ़ी उत अं¡गरेज न बनि हैं
पहिरि कोट पतलून चुरूट के गर्व न तीन है
भारत ही में जन्म लियो भारत ही रहि है
भारत ही के धर्म – कर्म पर विद्या गहि है।[1]

अपनी संस्कृति की मूल विशेषताओं की रक्षा करते हुए इन लोगों ने नई सभ्यता की अनेक बातों को अपनाया भी ।

भारतेंदु जी को 12 वर्ष की अवस्था में सम्पूर्ण उत्तर भारत की यात्रा करने के बाद खुद के नागरिक संस्कार व्यंग लगे। उन्होंने समझा की गा¡वों की संस्कृति को साहित्य का रूप देकर ही वह नागरिकों की सेवा कर सकते है। भारतेंदुजी एक ओर जहा¡ अंग्रेजी राज्य का विरोध करते थे तो दूसरी ओर वे भारतीय रूढ़िवाद को भी चुनौती देती थी। इन्होंने अंधविश्वासों और कुरीतियों की तीव्र आलोचना की थी। भारतेंदु जी की आलोचना आज हिंदी लेखकों को उनके कर्तव्य की याद दिलाती है कि जब तक इस अज्ञान और विषमता का नाश न हो, तब तक उन्हें संतोष न करना चाहिए।[2]

अंग्रेजी शासन अपनी सभ्याता एवं संस्कृति को हमारी सभ्यता एंव संस्कृति पर लादने का प्रयास कर रहा था। परिस्थितिया¡ भारतीय चेतना को धक्के देकर जगा रही थी। भाषा के माध्यम से संस्कृति को जीवित रखने का पूरा प्रयास किया जा रहा था। भाषा देश की पूरी संस्कृति होती है। किसी देश की शक्ति उसकी सांस्कृतिक सौम्यता एवं समाजिक महत्व को बनाए रखता है। इसलिए इस काल के लेखकों ने अपनी भाषा के उत्थान एवं प्रसार पर बहुत जोर दिया।

'निज भाषा निज देश हित वारे मन धन प्रान।
रहहिं प्रेम – पद – मत्त साब, भारत के संतान ।।[3]

अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से यहा¡ की सभ्यता, संस्कृति एवं विचारों पर धातक प्रभाव भी पड़ा, भारत की कायापलट को देखकर प्रेमघन जी लिखते है –

ऊपर सो भारत सकल पलटि रूप प्राचीन ।
मनहुं विलायत को बनो बच्चा एक नवीन ।।[4]

हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का लक्ष्य आध्यात्मिक उन्नति करना था। वर्तमान की बाह्य व भौतिक उन्नति को संस्कृति नहीं बल्कि कर्मकांड या आडम्बर कहा जाना चाहिए। वर्तमान में संस्कृति की परिभाषा ही बदल गई है। क्योंकि संस्कृति तभी फलीभूत हो सकती है जब वो समयानुसार बदलती रहे। प्राचीन परम्पराओं व मान्यताओं को समयानुसार संसोधित करते रहने से ही संस्कृति विशुद्ध रूप में सामने आ सकती है।

विज्ञान और संस्कृति का संबंध बहुत पुराना है। समाज में प्रचलित अंधविश्वासों व मिथ्या को असत्य सिद्ध करने के लिए वैज्ञानिक आधार मजबूत स्तंभ होता है। ग्रह नक्षत्र धुमकेतु दिखाई देने से शुभ–अशुभ, युद्ध या अकाल से कुछ लेन–देना नहीं होता। ये भी इस विशाल ब्रह्मांड के उसी प्रकार अंग है जिस प्रकार प्रति दिन दिखाई देने वाले बाकी ग्रह नक्षत्र है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

वर्तमान की बनावटी संस्कृति को प्राचीन संस्कृति से भिन्न बताते हुए बालकृष्ण भट्ट जी प्राचीन मूल्यों के बारे में लिखते है – 'हमारे पुराने लोग शून्य एकांत स्थान में जन समाज से बडी दूरी किसी पर्वत स्थली या पवित्र नदी के तट पर स्वच्छ जलवायु में नीवार सागपात या कन्दमूल फल रखकर रहते थे। बेशकीमत दस्तर खान उनके लिए नहीं सजाया जाता था पर विचार उनके कैसे ऊ¡चे होते थे कि संसार की कोई बात न बची रही जिस पर उन्होंने ख्याल नहीं दौड़ाया। और जिसको अपने मस्तिषक में नहीं रख लिया।[5]

संदर्भ सूची

1. भारत सौभाग्य, अंबिकादत्त व्यास, पृ.सं. 4–5 सस्ता साहित्य भण्डार, दिल्ली।
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याए¡, पृ.सं. 88 डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1984 ई.
3. 'जन्म सुफल कब होय', 'प्रताप पीयूष', प्रतापनारायण मिश्र, पृ. सं. 191 सीटी बुक हाउस, कानपुर, संस्करण – 1933 ई.
4. 'आर्याभिन्नदन' प्रेमधन–सर्वस्व, प्रथम–भाग, पृ.सं. 384 सहित्य सम्मेलन, प्रयाग, संस्करण – 1950 ई.
5. प्रतिनिधि संकलन, बालकृष्ण भट्ट, संपादक – धनंजय भट्ट, पृ.सं. 142 नागरी प्रचारिणीसभा, काशी, संस्करण – 2004 ई.

RRIJM 2015, All Rights Reserved